

कृषि-खाद्य प्रणालियों में संलग्न महिलाओं पर जलवायु का प्रभाव

प्रलिम्स के लिये:

राष्ट्रीय महिला कृषि दल, [लॉस एंड डेमेज फंड](#), [जलवायु परिवर्तन](#)

मेन्स के लिये:

महिला कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, कृषि, रोजगार और उत्पादन, खाद्य सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

चर्चा में क्यों?

फ्रंटियर्स इन सस्टेनेबल फूड सिस्टम्स जर्नल में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन में पूरे विश्व में [कृषि-खाद्य प्रणालियों में संलग्न महिलाओं पर जलवायु संकट](#) के असमान प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

- यह शोध [कृषि क्षेत्र में महिलाओं की असुरक्षा](#) पर प्रकाश डालते हुए उन हॉटस्पॉट की पहचान करता है जहाँ जलवायु जोखिम की सबसे गंभीर स्थिति है।

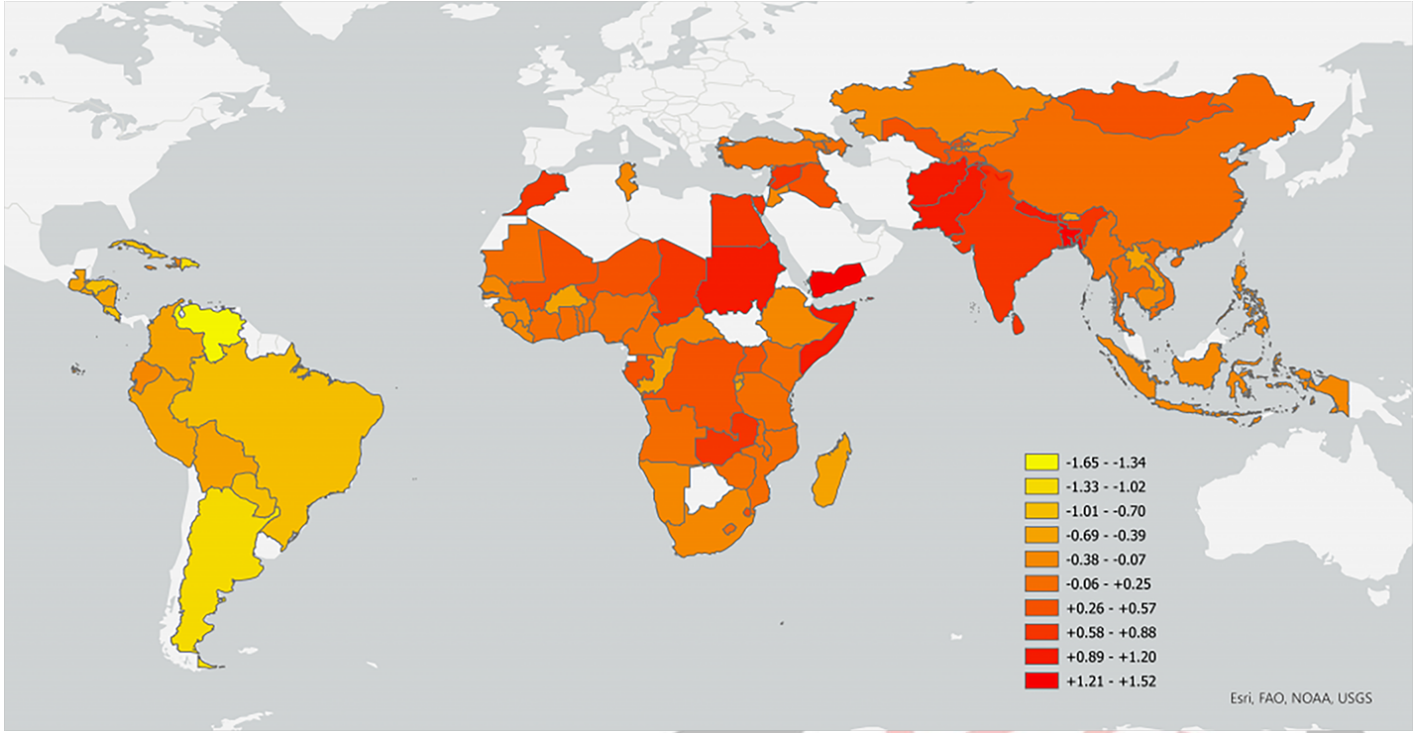
नोट:

- कृषि-खाद्य प्रणालियाँ [व्यक्तियों](#), गतिविधियों और संसाधनों का [नेटवर्क](#) हैं जो खाद्यान्न का उत्पादन, प्रसंस्करण, वितरण तथा उपभोग करते हैं।
 - इनमें कृषि, व्यापारी, प्रोसेसर, खुदरा विक्रेता, उपभोक्ता आदि शामिल हैं, जो कृषि-खाद्य मूल्य शृंखला में शामिल हैं।

अध्ययन के मुख्य बंदी क्या हैं?

- [जलवायु परिवर्तन के खतरों की वैश्विक रैंकिंग](#):
 - अध्ययन में कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं द्वारा सामना किये जाने वाले जलवायु परिवर्तन के खतरे के आधार पर 87 देशों को रैंक दिया गया है।
 - [भारत 12वें स्थान पर है](#), अन्य एशियाई देशों बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं नेपाल को भी गंभीर जोखिम का सामना करना पड़ रहा है।
- [उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान](#):
 - कृषि-खाद्य प्रणालियाँ, जिनमें उत्पादन, कटाई के बाद देख-रेख और वितरण शामिल है, विशेष रूप से जोखिम में हैं।
 - अफ्रीकी और एशियाई क्षेत्रों में मध्य, [पूर्व व दक्षिणी अफ्रीका तथा पश्चिम एवं दक्षिण एशिया](#) अत्यधिक भेद्यता वाले क्षेत्रों के रूप में उभरे हैं।
 - [नमिन और मध्यम आय वाले देशों \(LMIC\)](#) में रहने वाले व्यक्तियों को अधिक जोखिम है।
- [जलवायु-कृषि-लगा असमानता हॉटस्पॉट](#):
 - अनुसंधान ने क्षेत्रों को 'जलवायु-कृषि-लगा असमानता हॉटस्पॉट' के रूप में मैप करने के लिये [जलवायु, लिंग और कृषि-खाद्य प्रणालियों](#) पर संयुक्त अंतरदृष्टि प्रदान की।
 - अध्ययन ने इन संकेतकों के आधार पर प्रत्येक देश के जोखिम की गणना की और प्रत्येक LMIC देश के लिये रंग-कोडित मानचित्र पर स्कोर अंकित किया।
 - ये हॉटस्पॉट मानचित्र लिंग-उत्तरदायी जलवायु कार्रवाई के संबंध में मार्गदर्शन कर सकते हैं, विशेष रूप से [जलवायु सम्मेलन \(COP 28\)](#) और जलवायु नविश जैसे आगामी जलवायु सम्मेलनों में।

- यह **लॉस एंड डेमेज फंड** और अन्य जलवायु नविशों के संबंध में जारी वार्ता में विशेष रूप से प्रासंगिक है।



//

■ नीति निर्माण और जलवायु कार्रवाई:

- यह अध्ययन कृषि में महिलाओं पर खतरों के असमान प्रभाव को दर्शाते हुए **नीति निर्माण** के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य करता है।
- पछिले अध्ययनों से पता चला है कि जलवायु परिवर्तन से जुड़ी प्राकृतिक आपदाओं के बाद **महिलाओं और लड़कियों के भूखे रहने की संभावना अधिक** है।
 - भारत में पुरुषों की तुलना में दोगुनी संख्या में महिलाओं ने **सूखे** के कारण कम खाना खाने की बात कही।
- हॉटस्पॉट मानचित्र निर्णय निर्माताओं और नविशकों को उन क्षेत्रों में **वर्तित और नविश को लक्ष्य बनाने में** सहायता कर सकते हैं, जहाँ महिलाएँ जलवायु परिवर्तन के जोखिमों से सबसे ज़्यादा प्रभावित होती हैं।

कृषि-खाद्य प्रणालियों में संलग्न महिलाओं को जलवायु परिवर्तन कैसे प्रभावित करता है?

■ खाद्य सुरक्षा और आय में कमी:

- जलवायु परिवर्तन कृषि उत्पादन को बाधित करता है, फसल की पैदावार और गुणवत्ता को कम करता है तथा कीटों और बीमारियों का खतरा बढ़ाता है।
 - इससे **महिला किसानों की खाद्य सुरक्षा और आय प्रभावित होती है**, जो प्रायः अपनी आजीविका के लिये कृषि पर निर्भर रहती हैं।
 - महिला किसानों को बाज़ार, ऋण, इनपुट और वसति सेवाओं तक पहुँचने में भी **अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है**, जिससे जलवायु संकट एवं तनाव से निपटने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है।

■ बढ़ा हुआ कार्यभार:

- जलवायु परिवर्तन से **जल, श्रम और प्राकृतिक संसाधनों की मांग बढ़ जाती है**, जिससे महिला किसानों पर कार्य का बोझ बढ़ जाता है, उन पर अक्सर जल, ईंधन हेतु लकड़ी और चारा इकट्ठा करने के साथ-साथ घरेलू एवं देखभाल कर्तव्यों का पालन करने की ज़िम्मेदारी होती है।
- महिला किसानों को भी **बदलते मौसम और वर्षा पैटर्न के अनुरूप ढलना पड़ता है**, जिसके लिये उन्हें **नई फसलें, तकनीकें या प्रथाएँ अपनाने या अन्य क्षेत्रों में** पलायन करने की आवश्यकता हो सकती है।

■ स्वास्थ्य और खुशहाली में कमी:

- जलवायु परिवर्तन महिला किसानों के स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करता है, जो **हीट स्ट्रोक, जलजनित एवं वेक्टर जनित बीमारियों, कृपोषण व मानसिक तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं**।
 - महिला किसानों के पास **स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता और स्वच्छता सुविधाओं तक भी कम पहुँच है**, जिससे जलवायु से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

- जलवायु परिवर्तन [लगा आधारति हिसा](#) को भी बढ़ाता है, विशेषकर संघर्ष और आपदा स्थितियों में।
- सीमिति भागीदारी तथा सशक्तीकरण:
 - जलवायु परिवर्तन महिला कसिनॉ की भागीदारी तथा सशक्तीकरण प्रयासों को प्रभावति करता है, जनिहें अमूमन कृषि तथा जलवायु परिवर्तन से संबंधति [नरिणय लेने की प्रक्रियाओं](#) एवं संस्थानों से [बाहर रखा जाता है](#)।
 - महिला कसिनॉ की पहुँच सूचना, शक्ति तथा प्रशक्ति तक कम है, जसिसेजलवायु परिवर्तन के प्रतितिनकी जागरूकता एवं अनुकूलन की क्षमता सीमिति हो जाती है।
 - महिला कसिनॉ को [सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानदंडों](#) व बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है जो उनकी गतिशीलता, स्वायत्तता तथा अधिकारों को प्रतितिधति करते हैं।

कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं से संबंधति सरकारी पहलें क्या हैं?

- [राष्ट्रीय महिला कसिन दविस](#) (कृषिक्षेत्र में महिला कसिनॉ के बहुमूल्य योगदान को पहचानने तथा उसकी सराहना करने के लयिभारत में प्रतितिविर्ष 15 अक्तूबर को मनाया जाता है)।
- [राष्ट्रीय सतत कृषि मिशिन \(NMSA\)](#)।
- [परंपरागत कृषि विकास योजना](#)।
- [महिला कसिन सशक्तीकरण परियोजना \(MKSP\)](#)।
- [महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधनियिम \(MGNREGA\)](#)।

आगे की राह

- भूमि, जल, ऋण, इनपुट, बाजार, वसितार तथा सामाजिक सुरक्षा जैसे [संसाधनों](#), सेवाओं एवं अवसरों तक महिलाओं की पहुँच व नयित्रण बढ़ाना।
- कृषक समूह, सहकारी समिति, बैठक तथा नीति प्लेटफॉर्म जैसे [नरिणय लेने एवं शासन संरचनाओं](#) में महिलाओं की भागीदारी व नेतृत्व को बढ़ावा देना।
- [जलवायु-स्मार्ट कृषि](#), आपदा जोखिम में कमी, जलवायु सूचना एवं प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों पर महिलाओं के ज्ञान तथा कौशल को सशक्त करना।
- सामाजिक व सांस्कृतिक मानदंडों, कानूनी एवं संस्थागत बाधाओं व लगी आधारति हिसा जैसे लैंगिक असमानता के अंतरनहिति कारणों का संधान कर महिला सशक्तीकरण एवं अभिकरण का समर्थन करना।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

[?/?/?/?/?]:

प्रश्न. उन वभिनिन आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक बलों पर चर्चा कीजिये जनिसे भारत में कृषि में महिलाकरण को बढ़ावा मलि रहा है। (2014)